

Conflict Theory of Social Change (संघर्ष सिद्धान्त)

परिभाषा

संघर्ष सिद्धान्त के अनुसार समाज में **असमानता, शोषण और शक्ति असंतुलन** ही सामाजिक परिवर्तन का मूल कारण हैं। जब वंचित वर्ग प्रभुत्वशाली वर्ग को चुनौती देता है तो **संघर्ष** जन्म लेता है, और यही संघर्ष समाज में परिवर्तन लाता है।

प्रमुख विचारक

- **कार्ल मार्क्स (Karl Marx)**
 - समाज का इतिहास **वर्ग संघर्ष का इतिहास** है।
 - सामंत और किसान → पूँजीपति और मजदूर → अन्ततः समाजवाद।
 - संघर्ष = शोषित वर्ग की मुक्ति और नए समाज की रचना।
 - **राल्फ डाहरेडॉर्फ (Ralf Dahrendorf)**
 - औद्योगिक समाज में भी संघर्ष मौजूद है।
 - संघर्ष केवल आर्थिक वर्गों में नहीं बल्कि **अधिकार और सत्ता के वितरण** से भी पैदा होता है।
 - समाज निरंतर **संघर्ष और समायोजन (Conflict & Accommodation)** से बदलता है।
 - **लेनिन, ग्राम्शी**
 - संघर्ष केवल आर्थिक नहीं, बल्कि **वैचारिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व (Hegemony)** के खिलाफ भी होता है।
-

विशेषताएँ (Features)

1. सामाजिक परिवर्तन का मुख्य स्रोत = **संघर्ष**।
2. असमानता और शोषण ही संघर्ष का कारण।
3. संघर्ष कभी **क्रांतिकारी (Revolutionary)** और कभी **सुधारात्मक (Reformative)** होता है।

4. यह दृष्टिकोण समाज को स्थिरता की बजाय **गतिशीलता** की प्रक्रिया मानता है।
 5. हर समाज में संघर्ष अनिवार्य है और उससे ही प्रगति होती है।
-

आलोचना

- केवल **संघर्ष** पर ज़ोर, सहयोग (Cooperation) की भूमिका को अनदेखा करता है।
 - परिवर्तन को अक्सर **हिंसक या क्रांतिकारी** मानता है।
 - समाज के अन्य पहलुओं (संस्कृति, तकनीक) को कम महत्व।
-

निष्कर्ष

संघर्ष सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि **असमानता और शोषण से असंतोष और संघर्ष जन्म लेते हैं**, और यही संघर्ष समाज को नए ढाँचे की ओर ले जाता है। यह सिद्धान्त सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए अत्यंत प्रभावशाली है, विशेषकर तब जब हम वर्ग, जाति, लिंग और शक्ति संबंधों की असमानताओं का अध्ययन करते हैं।